विश्वास की लड़ाई एक निरंतर संघर्ष है

जब तक हम इस संसार में हैं, हम हर दिन एक आत्मिक युद्ध में होते हैं।
जैसे ही आप यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं और पूरे मन से उनका अनुसरण करने का निर्णय लेते हैं, उसी क्षण आप अंधकार के राज्य के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर देते हैं। और यह युद्ध तब तक चलता रहेगा जब तक आप इस धरती से विदा नहीं ले लेते।

इस विश्वास की लड़ाई का कोई अंत नहीं है।
आप एक परीक्षा से गुजरेंगे, फिर थोड़ा विश्राम मिलेगा — और तभी अचानक एक और नई परीक्षा उठ खड़ी होगी। लेकिन प्रभु आपके साथ रहेंगे और आपको विजय देंगे।

शैतान मनुष्य की तरह हार मानने वाला नहीं है।
आपके विश्वास की यात्रा की शुरुआत से लेकर अंत तक वह आपके विरुद्ध लड़ाई करता रहेगा।
इसलिए आपको तैयार रहना चाहिए।
यदि आपने पहले शैतान की सेवा की थी, और उसने आपको कोई “भूमि” दी थी, तो अब जब आपने उसे त्याग दिया है, वह उस भूमि को फिर से पाने की कोशिश करेगा। यदि उसने आपको सम्मान दिया था, अब वह वही सम्मान आपसे छीनने का प्रयास करेगा — और अपने सेवकों को आपके विरुद्ध भेजेगा।

हम प्रभु यीशु के जीवन से भी यह देख सकते हैं कि शैतान ने उनके साथ उनकी सेवकाई की शुरुआत में ही विरोध करना शुरू कर दिया था — और अंत तक उनका पीछा नहीं छोड़ा।

बहुत लोग सोचते हैं कि जंगल में यीशु की परीक्षा ही अंतिम थी। लेकिन सच्चाई यह है कि वह तो केवल शुरुआत थी!
यदि वही अंत होता, तो यीशु को क्रूस पर न चढ़ाया जाता।

लूका 4:12–13:

“यीशु ने उत्तर दिया, यह भी कहा गया है कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न ले। और जब शैतान ने सब परीक्षाएँ
पूरी कर लीं, तो वह कुछ समय के लिए उससे अलग हो गया।”

यहाँ देखें — “कुछ समय के लिए उससे अलग हो गया” —
इसका अर्थ है कि वह फिर लौटेगा।
उसने अस्थायी रूप से पीछे हटकर अपनी अगली योजना बनानी शुरू की। हाँ, वह जानता था कि वह हार गया है, लेकिन फिर भी उसने हार नहीं मानी।

बाद में वह और भी अधिक शक्ति के साथ लौटा — लोगों के द्वारा, धार्मिक अगुवों के द्वारा, यहाँ तक कि शासकों के द्वारा।

यहाँ तक कि राजा हेरोदेस तक यीशु को मारने की योजना बना रहा था! कल्पना कीजिए — धार्मिक अगुवा भी आपके विरुद्ध हैं, और सरकार भी आपको मारना चाहती है!
यह कितनी तीव्र आत्मिक लड़ाई होगी!

और वह वहीं नहीं रुका।
जब यीशु क्रूस पर लटके हुए थे, तब भी शैतान उनके पास आया — लोगों के माध्यम से — और वही बातें दोहराईं जो उसने पहले जंगल में कही थीं:

“यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस से उतर आ!”

यहाँ तक कि आखिरी क्षण में भी शैतान यह सोचता रहा कि वह यीशु को गिरा सकता है।
यीशु अंतिम साँस तक युद्ध में डटे रहे।

इसीलिए उन्होंने अपने चेलों से कहा:

यूहन्ना 16:33:

“मैंने ये बातें तुमसे इसलिए कहीं कि तुम मुझ में शांति
पाओ। संसार में तुम्हें क्लेश होता है; परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैंने संसार को जीत लिया है।”

यह जो “क्लेश” की बात है — इसका मतलब यह नहीं है कि आपकी बार बंद हो गई, या आपका पैसा चोरी हो गया, या आपको किसी अनैतिक कार्य में पकड़े जाने पर पीटा गया या जेल में डाल दिया गया।
नहीं! यह तो आपके पापों के परिणाम हैं — ये आत्मिक परीक्षाएँ नहीं हैं।

सच्ची परीक्षा तब आती है जब आप बुराई को नकारते हैं।
जैसे — आप नौकरी से निकाल दिए जाते हैं क्योंकि आपने व्यभिचार से इंकार किया, या आप पर झूठा आरोप लगाया जाता है क्योंकि आपने भ्रष्ट रास्तों को मना कर दिया,
या आपको तिरस्कृत किया जाता है क्योंकि आपने मूर्ति-पूजा, पितृ- पूजन या तंत्र-मंत्र को त्याग दिया।

यह सब ही असली “धर्म के क्लेश” हैं।

क्योंकि ये परीक्षाएँ जीवन के अंत तक चलती रहेंगी।
बाइबल हमें चेतावनी देती है कि हमें धैर्य रखना है, सहना है और डरना नहीं है,
क्योंकि प्रभु हमारे साथ होंगे —
और हमें आगे एक ऐसा इनाम मिलेगा जो कभी नष्ट नहीं होगा: जीवन का मुकुट।

याकूब 1:12:

“धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है, क्योंकि
वह खरा निकलकर जीवन का मुकुट पाएगा, जिसे प्रभु ने अपने प्रेमियों से वादा किया है।”

प्रकाशितवाक्य 2:9–10:

“मैं तेरे क्लेश और तेरी दरिद्रता को जानता हूँ — तुझमें तो धन है — और उन लोगों की निन्दा को भी जो यह कहते हैं कि वे

यहूदी हैं, पर हैं नहीं, बल्कि शैतान की सभा हैं। उन बातों से
मत डर जिनसे तुझे दु:ख उठाना होगा। देख, शैतान तुम में से
कुछ को बन्दीगृह में डालेगा ताकि तुम परखा जाओ; और तुम्हें
दस दिन तक क्लेश होगा। मृत्यु तक विश्वासयोग्य रहो, और मैं
तुझे जीवन का मुकुट दूँगा।”

प्रभु आपको आशीष दे।

यदि आप अब तक उद्धार नहीं पाए हैं — अनुग्रह का द्वार अभी खुला है।
लेकिन यह द्वार हमेशा खुला नहीं रहेगा।
समय बड़ी तेज़ी से निकल रहा है — और जल्द ही यह संसार समाप्त होगा।

फिर हमारे प्रभु यीशु मसीह का राज्य प्रारंभ होगा।
वहाँ प्रभु अपने संतों को उनके धैर्य के अनुसार प्रतिफल देंगे। जिन्होंने अधिक सहा, उन्हें अधिक प्रतिफल मिलेगा।
प्रभु हमें कृपा दे कि हम भी वहाँ तक पहुँच सकें।

मरनाता!

Share on:

WhatsApp